

मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी), जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने 14 अक्टूबर, 2025 को अपना 39वां 8-दिवसीय ऑनलाइन एनईपी-2020 ओरिएंटेशन एवं सेंसिटाइजेशन कार्यक्रम किया संपन्न

नई दिल्ली, 16 अक्टूबर, 2025

मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी), जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) ने 6 से 14 अक्टूबर 2025 तक आयोजित अपने 39वें 8-दिवसीय ऑनलाइन एनईपी ओरिएंटेशन एवं सेंसिटाइजेशन कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन किया। इस कार्यक्रम में पूरे भारत के 18 राज्यों और 15 विषयों के 137 संकाय सदस्यों और शोध छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

एमएमटीटीसी की मानद निदेशक प्रो. कुलविंदर कौर ने अपने स्वागत भाषण में एनईपी 2020 के परिवर्तनकारी दृष्टिकोण- एक समग्र, कौशल-उन्मुख और आजीवन अधिगम पर आधारित शिक्षा प्रणाली का निर्माण- पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समन्वयन जेएमआई के वाणिज्य एवं व्यवसाय अध्ययन विभाग के प्रो. मोहम्मद कमालुन नबी ने किया।

सत्र की शुरुआत एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रो. ऋषिकेश सेनापति द्वारा "समग्र और बहु-विषयक शिक्षा" पर एक व्याख्यान के साथ हुई। उन्होंने शिक्षार्थियों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देने की दिशा में रटने की शिक्षा से आगे बढ़ने की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय के एसजीटीबी खालसा कॉलेज के प्रो. बिभु पी. साहू ने "अनुसंधान और विकास" पर विस्तार से चर्चा की, और उच्च शिक्षा में शिक्षण और अधिगम के लिए नैतिक अनुसंधान प्रथाओं को एकीकृत करने और एक जांच-संचालित दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद, जेएमआई के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के प्रो. मनसफ़ आलम ने "एनईपी 2020 के अनुसार शिक्षण और अनुसंधान में एआई-आधारित आईसीटी अनुप्रयोग" पर एक सत्र आयोजित किया, जिसमें प्रतिभागियों को प्रौद्योगिकी-सक्षम शैक्षणिक उपकरणों से परिचित कराया गया।

सांस्कृतिक और औद्योगिक संबंधों पर सत्र में एएमयू के शिक्षा विभाग के प्रो. साजिद जमाल ने "भारतीय ज्ञान प्रणालियों" पर बात की, और जेएमआई के प्रबंधन अध्ययन विभाग के प्रो. नौशादुल हक मलिक ने "रोजगार क्षमता और कौशल विकास को बढ़ाने के लिए उद्योग-अकादमिक सहयोग को मजबूत करना" पर चर्चा की।

इसके अलावा, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रबंधन अध्ययन विभाग की प्रमुख प्रो. सुनीता तंवर ने "उच्च शिक्षा में कौशल विकास और नवाचार के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ावा देना" पर एक ज्ञानवर्धक सत्र दिया, जिसमें छात्रों के बीच उद्यमशीलता की मानसिकता और नवाचार-संचालित शिक्षा को विकसित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। एएमयू के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग के प्रोफेसर मोहम्मद खालिद आजम ने "छात्र विविधता और समावेशी शिक्षा" पर अपने दृष्टिकोण साझा किए, जिसमें समान पहुंच, समावेशी शिक्षाशास्त्र और सभी शिक्षार्थियों के लिए सहायक शिक्षण वातावरण के निर्माण पर जोर दिया गया।

झारखंड के विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चंद्र भूषण शर्मा और रेवेनशॉ विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के डीन प्रो. सुदर्शन मिश्रा सहित प्रतिष्ठित शिक्षाविदों ने "एनईपी 2020 की व्याख्या" और "उच्च शिक्षा और समाज" पर विचारोत्तेजक सत्र प्रस्तुत किए। उनके विचार-विमर्श ने एक समतामूलक, प्रगतिशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी उच्च शिक्षा परिदृश्य को आकार देने में शैक्षिक सुधारों की परिवर्तनकारी क्षमता को रेखांकित किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग की प्रो. अर्चना कौशिक ने "समग्र, अंतःविषयक और बहु-विषयक शिक्षा" में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका पर जोर दिया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रशासन विभाग के प्रो. परवेज़ तालिब ने "शैक्षणिक नेतृत्व, शासन और प्रबंधन" पर अपने आकर्षक सत्र के माध्यम से चर्चा को और समृद्ध किया, जिसमें संस्थागत उत्कृष्टता को बढ़ावा देने में दूरदर्शी नेतृत्व और प्रभावी शासन के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ बिजनेस के प्रो. सुपरण कुमार शर्मा ने "योग्यता-आधारित, अनुभवात्मक और परिणाम-उन्मुख शिक्षा" पर एक ज्ञानवर्धक सत्र दिया, जिसमें शैक्षणिक ढाँचों को वास्तविक दुनिया के कौशल और मापन योग्य परिणामों के साथ संरेखित करने के महत्व पर बल दिया गया। उनके बाद जामिया हमदर्द के प्रबंधन अध्ययन विभाग के प्रो. मोहम्मद शाहनवाज़ आब्दीन ने "अकादमिक-उद्योग सहयोग और करियर की तैयारी के बदलते प्रतिमान" पर बात की, जिसमें छात्रों को भविष्य में रोज़गार और पेशेवर उत्कृष्टता के लिए तैयार करने में शिक्षा और उद्योग के बीच विकसित हो रही गतिशीलता पर प्रकाश डाला गया।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष और डीन, प्रो. मनोज कुमार सक्सेना ने "प्लेगियरिज्म की समझ: छात्रों और शिक्षकों की सुरक्षा के लिए रणनीतियाँ" पर एक ज्ञानवर्धक सत्र दिया, जिसमें शोध और शिक्षण में शैक्षणिक अखंडता, नैतिक विद्वता और मौलिकता के महत्व पर बल दिया गया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र के प्रोफेसर और एचआरडीसी के पूर्व निदेशक, प्रो. अनीसुर रहमान ने "छात्र विविधता और समावेशी शिक्षा" विषय पर अपने व्याख्यान के साथ विषयगत सत्रों का समापन किया। उन्होंने एक जीवंत शैक्षणिक वातावरण के आवश्यक स्तंभों के रूप में सहानुभूति, समानता और समावेशिता के मूल्यों पर जोर दिया।

मूल्यांकन के बाद, प्रतिभागियों को अपने अनुभवों को समेकित करने, अंतर्दृष्टि का आदान-प्रदान करने और रचनात्मक प्रतिक्रिया साझा करने का अवसर मिला। कार्यक्रम का समापन शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार में उत्कृष्टता के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने की सामूहिक प्रतिबद्धता के साथ हुआ। प्रतिभागियों ने समृद्ध शैक्षणिक गतिविधियों के लिए गहरी प्रशंसा व्यक्त की और सार्थक संवाद, सहयोग और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने वाले एक प्रेरक मंच प्रदान करने के लिए एमएमटीटीसी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया की सराहना की।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी